चतुर्थ अध्याय -

'पानी के प्राचीर' में वातावरण -आँचलिकता के विशेष संदर्भ में -

प्रस्तावना -

आँचलिक उपन्यासों के लिए अन्य तत्वों की तुलना में देश काल और वातावरण का तत्व अत्यंत ही महत्वपूर्ण होता है। एक प्रकार से यह तत्व इन उपन्यासों में प्राण-तत्व का कार्य करता है। आँचलिक उपन्यासों का प्रतिपाद्य एक अंचल विशेष का जीवन होता है इसलिए ऐसे उपन्यासों में 'देशकाल या वातावरण' का तत्व अधिक विशिष्ट रूप ग्रहण कर लेता है।

आँचलिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन के चित्रण में भौगोलिक-प्राकृतिक परिवेश अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। उसमें ग्राम अंचल के संस्कारों, परंपराओं, मान्यताओं, विश्वासों, खान-पान, वेशभूषा एवं जीवन-मूल्यों तथा वहाँ की सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में परिवेश सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहता है।

अंचल को अंचल बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भौगोलिक परिवेश ही होता है क्योंकि वही उसे विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करता है। ऐसे उपन्यासों में ग्राम्य वातावरण की अभिव्यक्ति प्रकृति-चित्रण तथा समस्याओं के कुशल उद्‌घाटनद्वारा की जाती है। प्राकृतिक परिवेश प्रकृति के नाना उपादानों की सहाय्यता से मुखर हो उठता है। वैसे देखा जाय तो प्रकृति के ये तत्व ही परिवेश का निर्माण करते हैं। प्राकृतिक वातावरण प्राकृतिक दृश्यों-प्रात: संध्या, रात्रि, ऋतुओं, खेत-खलिहानों आदि से संबंधित होता है। और सामाजिक वातावरण रहन-सहन की विशेषताओं, समस्याओं तथा धार्मिक और सांस्कृतिक निरूपण से संबंधित होता है। डॉ. मक्खनलाल 'हिंदी उपन्यास: सिध्दांत व समीक्षा' में देश -काल के बारें में कहते हैं -

'' देश -काल के अंतर्गत समाज, राष्ट्र या राष्ट्र की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ, आचार विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि आते हैं। '' 1

इसप्रकार आँचलिक उपन्यास में देश-काल और वातावरण महत्वपूर्ण होता है।

अंचल -

'अंचल' शब्द का प्रयोग सामान्यत: किसी क्षेत्र या ग्राम के सीमांत प्रदेश के लिए किया जाता है। जब कोई भी कृति किसी परिसर क्षेत्र-विशेष या अंचल को लेकर लिखी जाने लगी तब आँचलिकता शब्द विशेष अर्थ ग्रहण करने लगा। हिंदी में 'आँचलिक' शब्द उपन्यास के संदर्भ में उसकी कथा, भाषाशैली व शिल्पगत विशेषताओं को प्रकाशित करता है। 'आँचलिकता' अंचल शब्द से बना है। अंचल का अर्थ है प्रदेश - विशेष , एक सीमित क्षेत्र जो एक विशिष्ट भौगोलिक पर्यावरण में आबध्द है । अंचल शब्द से एक विशिष्ट भू-भाग या भू-प्रदेश का बोध होता है, जो अपनी स्थानीय, भौगोलिक या प्राकृतिक विशेषताओं के कारण अन्य प्रदेशों से भिन्नता रखता है।

अंचल : शब्द की व्याख्या -

अंचल शब्द का सीधा और स्पष्ट अर्थ है जनपद या 'क्षेत्र' -विशेष, जो अपने में एक पूर्ण भौगोलिक इकाई होता हैं। अंचल शब्द का अर्थ किसी ऐसे भूखंड, प्रांत, भाग या देश- विशेष से है, जिसकी अपनी एक विशेष भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, भाषा और अपनी समस्याएँ हों। 'अंचल 'शब्द से आँचलिक विशेषण बनता है।

''आँचलिकता का अर्थ है क्षेत्र-विशेष के सत्य का उद्‌घाटन करता हुआ जीवन , जो किसी एक परिवेश विशेष नहीं वरन् उस खंड की समग्र क्षेत्रीयता का प्रतीक है। '' ।2 अंचल विशेष को एक विशिष्ट भौगोलिक खोज का नाम है 'आँचलिकता'। आँचलिकता की परिभाषा में दो बातों को विशेष महत्व है - अंचल का अंतरंग और अंचल का बाहयरूप। इनका इसप्रकार संबंध होना चाहिए कि वे एक-दूसरे के पूरक कहे जा सकें। अत: आँचलिकता में इन दोनों का अल्पाधिक मात्रा में होना आवश्यक है।

अत: यह स्पष्ट होता है कि अंचल या आंचल का प्रयोग किसी क्षेत्र या ग्राम के सीमांत प्रदेश के लिए ही किया जाता है। जब किसी क्षेत्र विशेष या अंचल को लेकर साहित्य रचना का प्रयास हुआ, आँचलिकता शब्द विशेष अर्थ ग्रहण करने लगा। कालांतर में 'आँचलिकता' एक विधा के रूप में पहचानी गयी और इसी प्रक्रिया में वह सामान्य अर्थ की परिधि का अतिक्रमण करके विशेष संदर्भ में प्रयुक्त होने लगी।

आँचलिक उपन्यास से संबध्द कतिपय शब्द-रूपों पर विचार करते समय हमने यह देखा कि आँचलिकता और आँचलिक उपन्यास में कितना निकट संबंध है। श्री रेणु के '' मैला आँचल'' के प्रकाशन

के साथ ही हिंदी आलोचना में उक्त शब्द चर्चा के विषय हो गये तथा आँचलिक उपन्यास की परिभाषा पर भी विद्वानों के अलग अलग विचार सामने आये। यहाँ विस्तार भय से , सभी परिभाषाओं को देना न संभव है, न उचित। परंतु कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ प्रस्तुत कर एक आँचलिक उपन्यास के वास्तविक स्वरूप और वैशिष्टय पर भली भाँति प्रकाश डाला जा सकता है।

प्रखर मार्क्सवादी समीक्षक डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय के अनुसार-ऐसे उपन्यासों में जनपद या अंचल ही नायक -नायिका का स्थान ग्रहण कर लेता है। आँचलिक उपन्यास जनपद-विशेष की मानसिकता (Mentality) प्रवृत्तियों (Tendencies) तथा उसके विशिष्ट (Distinct) व्यक्तित्व को कथा और पात्रों के माध्यम से रोचक बनाकर प्रस्तुत कर देता है। आँचलिक उपन्यास की विशेषता इस बात में है कि उसके द्वारा उस जनपद की विशिष्ट जीवन पध्दति (Mode of life) तथा उसके व्यक्तित्व से हमारी एकतानता स्थापित हो जाए। **''राधेश्याम शर्मा ' कौशिक' के अनुसार '' आँचलिक उपन्यास का प्रणेता आँचलिक संस्कृति का आँखों देखा चित्रण करता है। उसमें यथार्थ की स्थिति महत्वपूर्ण और विश्वसनीय होती है।'' 3**

डॉ. शशिभुषन सिंहल - ''उपन्यास जब क्षेत्र विशेष अंचल की लोक संस्कृति से बँधकर स्थानीय रंगत से युक्त जीवन प्रस्तुत करता है, उसे आँचलिक उपन्यास की संज्ञा प्राप्त होती है।'' 4

डॉ. गोविंद त्रिगुणायत -'' जिन उपन्यासों में स्थान विशेष के संपूर्ण वातावरण का सांग,संश्लिष्ट और निष्कपट रूप से समस्त स्थानीय विशेषताओं के साथ चित्र प्रस्तुत किया जाता है, उन्हें आँचलिक उपन्यास कहतें हैं।'' 5

श्री. प्रकाश वाजपेयी - '' एक सीमित अंचल या क्षेत्र के सर्वांगीण जीवन को वस्तुन्मुखी दृष्टि से प्रस्तुत करने का उपक्रम आँचलिक उपन्यास की एक उपयुक्त परिभाषा हो सकती है।''6

डॉ. देवराज उपाध्याय -'' आँचलिक उपन्यास में लेखक देश के एक विशिष्ट भाग पर बल देता है और वहाँ के जीवन का इस प्रकार निरूपण करता है कि पाठकों को उसके अनोखे गुणों, विशिष्ट प्रवृत्तियों और असामान्य रीति-रिवाजों तथा जीवन की प्रणाली का ज्ञान हो जाय।'' 7

डॉ.सुषमा धवन - '' किसी अंचल विशेष की भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं

का अंकन करना आँचलिक उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य माना जाता है।'' 8

डॉ. रामदरश मिश्र - ''आँचलिक उपन्यासकार जनपद विशेष के जीवन के बीच जिया होता है या कम से कम समीपी द्रष्टा होता है। वह विश्वास के साथ वहाँ के पात्रों, वहाँ की समस्याओं, वहाँ के संबंधों, वहाँ के प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश के समग्र रूपों, परंपराओं और प्रगतियों को अंकित कर सकता है क्योंकि उसने उन्हें अनुभूति में उतारा है। आँचलिक उपन्यास मानों हृदय में किसी प्रदेश की कसमसाती हुई जीवनानुभूति को वाणी देने का अनिवार्य प्रयास है।'' 9

आँचलिक उपन्यास को लेकर प्रस्तुत इन परिभाषाओं के किंचित शब्द भेद के अलावा लगभग समान बातें दुहरायी गयी हैं। इनके आधार पर आँचलिक उपन्यास की सामान्य विशेषताओं का निर्धारण इस प्रकार किया जा सकता है -

1. आँचलिक उपन्यास किसी एक विशिष्ट क्षेत्र या स्थान को अपनी कथावस्तु के लिए चुनता है।
2. अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशेषताएँ ही इसे सामान्य से विशिष्ट बनाती हैं।
3. इस भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश से प्रभावित या स्पंदित लोक-जीवन की सघन प्रस्तुति के लिए एक आँचलिक उपन्यास प्रतिबध्द होता है।
4. समस्त अंचल को एक समष्टि पात्र के रूप में मूर्त करने का प्रयास।
5. इस प्रयास के लिए वस्तुन्मुखी या यथार्थ वादी दृष्टि का उपयोग करना।
6. स्थानीय भाषा या बोली के सार्थक प्रयोगों के साथ नवीन शिल्प संवेदन को विशेष महत्व।

इन विशेषताओं के आलोक में ' आँचलिक उपन्यास' को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि आँचलिक उपन्यास एक ऐसा औपन्यासिक प्रकार है, जिसमें किसी विशिष्ट भू-भाग या अंचल या जाति-वर्ग को केंद्र में रखकर, वहाँ के भौगोलिक, सांस्कृतिक, एवं सामाजिक परिवेश से स्पंदित उसकी समग्र संश्लिष्ट जीवन-पध्दति को स्थानीय रंगतवाली सामान्य भाषा के माध्यम से अत्यंत ही संवेदनशील एवं यथार्थपरक अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया जाता है।

<u>पानी के प्राचीर में देश, काल, वातावरण -</u>

डॉ. रामदरश मिश्रजी का 'पानी के प्राचीर' एक आँचलिक उपन्यास है, जिसमें गोरखपुर जिले की दो नदियों- राप्ती और गौरा- से घिरे एक पिछडे भू-भाग की कहानी लिखी गयी है। यह विशाल भू-भाग युगों से अपनी सारी हरियाली राप्ती और गौरा नदियों की भूखी धाराओं को लुटाकर विवशता, अभाव और

संघर्ष के रूप में शेष रह गया हैं।

पांडेपुरवा एक ऐसा गाँव है जो चारों ओर से विभिन्न नदियों की धाराओं से कुछ इस प्रकार घिरा हुआ है कि, उसका बाहर कि दुनिया के साथ कोई जीवंत और रचनात्मक संबंध नहीं रह गया है। बँधे हुए जल की भाँति गांव का जीवन ठहर गया है। एक-दूसरे से कटे और विरोधात्मक संबंधों में बँधे गाँव के सभी लोग कभी-कभी कुछ विरल क्षण में एक इकाई बन जाते हैं। पर ऐसा किसी बाहरी संकट के अवसर पर ही होता है। गाँव के सभी लोगों की स्थिति नीरू के पिता सुमेश पांडे जैसी ही है, जो मजबूरियों से घिरा होने के नाते वर्तमान को ही देख पाता था, भविष्य के प्रति उसकी दृष्टि सदा सजग नहीं रह पाती थी। हर बार वर्तमान की छोटी उपलब्धियाँ भविष्य की बडी संभावनाओं का तिरस्कार कर देती हैं। यह एक अंचल विशेष का सम्यक चित्रण हैं।

<u>प्राकृतिक परिवेश -</u>

उपन्यास का प्रारंभ फाल्गुनी पौर्णिमा की चाँदनी रात के वातावरण से हुआ है। होली का त्यौहार मनाया जा रहा है। गाँव के लडके शोर मचाते हुए गली, रास्तों में दौडते हैं। ' बुरा न मानों होली है ' कहते हुंए गांव के जवानों, बूढों पर रंग फेंकते हैं। गोबर और कीचड उछालते हुए सयाने लोग भी निकलते हैं। और नगाडे, तालमृदंग के साथ रंग खेलते हुए गीत गाते हैं।

''डम्मर मटाक धिना ,डम्मर मटाक धिना, सदा अनंद रहे एहि द्वारे जीये से खेले फाग रे '' [10] होली के अतिरिक्त अन्य अनेक उत्सवों का भी आयोजन किया जाता है। इसमें नागपंचमी, दशहरा आदि उत्सव मनाते हैं या त्यौहार सारे गाँव में जान डाल देते हैं। गाँव के लडके चिक्का कबड्डी खेलते हैं। लडकियाँ अच्छी-अच्छी साडियाँ पहनती हैं और गीत भी गाती हैं।

अंचलवासियों के लिए हर ऋतु एक नया जीवन, नया अनुभव लाती है। इस उपन्यास में स्थान-स्थान पर प्रकृति चित्रण के दर्शन होते हैं।

'' फाल्गुन लग गया। फगुनाहट जी तोडकर बहने लगी। एक रसमय रूखापन चारों ओर धुंध की तरह छाने लगा। उडती हुई धुधों की शिखाओं के पार के किसी स्वप्निल देश की कल्पना मन को एक मंद उन्माद में तपाने लगी। पेडों के पत्ते डालों से झड-झड कर हवा में चक्कर काटते हुए जमीन पर बिछ जाने लगे। यहाँ

से वहाँ तक पेडों की स्फीत नंगी डालियाँ अपनी सूनी टहनियों की उंगलियों से आसमान में कुछ रेखाएँ खींचती सी नजर आने लगी।''

'' फागुन के मस्त वातावरण में नगाडे पर चौताल की कडियाँ उड जाती हैं। फिर फाग उडन लगा। रास्तों पर चलते हुए मुसाफिरों के ओठों से फाग की मस्त कडियाँ अपने आप फूटने लगीं। जिसे देखो, वही लाल मटर की फसल पक चुकी मजूरनें उन्हें उखाडनें लगीं। राह चलते मुसाफिरों से छेडखानी करके कुछ अपने क्वारेपन को राहत देती और कुछ अपने परदेशी की याद से महक उठतीं।

फागुन का मस्त वातावरण उतरा ही नहीं तो चैत भी मादक सौंदर्य एवं गंध लेकर आता है। आम्रमंजरियों की गंध झकाझक उड रही है, वासंती हवा झरझराहट के साथ पी कहाँ कर पपीहा रट लगाती है। विरहिनियों ने प्रियतम का इंतजार किया, पर आज भी वे नहीं आये हैं। तब विरहिनियाँ दर्दभरे गीत गाती हैं, तो चैत में संजोगिनी स्त्रियों को भी चैन नहीं आता । चैत की रात में कोयल कूक रही है। इनके स्वामी रूठकर चले गये। संयोगिनी कोयल से शिकायत करते हुए गाती हैं - '' सेजिया से सैंया रूसि गइले हो कोइलरि, तोरी मीठी बोलियाँ ----------होत भिनसखाँ में अगिया लगइबों अवर कटइबों धन निबिया हो रामा तोरी मीठी बोलियाँ।''**11**

वर्षाऋतु का भी यहाँ वर्णन मिलता है। वर्षा ऋतु के माध्यम से गाँवों पर प्रकृति का कोप किस प्रकार नदियों नालों की बाढ के रूप में प्रकट होता है, देखिए --

'' चारों ओर शोर हो रहा है, राप्ती बढ रही है, गौरी बढ रही है मदना में पानी गिर रहा हैं। शैतनवा नाले में भी पानी आ गया। अब खेत बचना मुश्किल है।'' **12**

इस अंचल में गौरी और राप्ती दो नदियों में बाढ आ जाती है, इसका अत्यंत यथार्थ चित्र लेखकने यहाँ प्रस्तुत किया है। बाढ का वर्णन करते हुए रामदरश मिश्रजी लिखते हैं -

'' आस-पास के नीचें के गाँवों में भी पानी पैठ गया है। गाँव की गलियों में घुटने भर पानी जमा हो गया है। घर गिर रहे हैं। लोग और पशु डूब रहे हैं। ऊँची-ऊँची मचानें डालकर बच्चों के साथ लोग उन पर बैठे किसी नाव का इंतजार कर रहे हैं। ऊपर से पानी बरस रहा हैं, नीचे धारा हाहाकार कर रही है। बीच में हवा हरहरा रही हैं। मचान हिलने लगती हैं। लोग कमर भर पानी में कंधों पर छोटे-छोटे बच्चों को लेकर खडे हैं। उनके चेहरों को मानों निचोड लिया गया है। एक पर्त स्याही जमा हो गयी है। आँखें खोह के समान

गहरी, शून्य और स्याह हो गयीं हैं, जिनके भीतर जडता ही जडता है और कुछ भी नहीं। कुछ-कुछ साहसी लोग पेडों पर चढ गये हैं। कुछ ने पेंडोंपर मचान बनाकर बाल-बच्चों को जमा कर लिया है। आसपास डालों पर सांप लटक रहे हैं - हताश, भयभीत और जड-से बिच्छुओंके झोंझ पत्तों पर रेंग रहे हैं।'' **13**

इस प्रकार उपन्यासकार प्रकृति चित्रण में बडा ही सफल हुआ है। उपन्यास में स्थान-स्थान पर प्रकृति -चित्रण के दर्शन मिलते हैं। प्राकृतिक परिवेश का मनोहारी वर्णन लेखक ने बडी सफलता के साथ किया हैं। प्रकृति के विभिन्न चित्र पाठकों की आँखों के सामने बरबस खडे हो जाते हैं। इसमें खेत-खलिहानों का भी वर्णन किया हैं ग्रामांचल की महिलाएँ खेतों में काम करती दिखाई देती हैं, वे काम करते - करते थक जाती हैं तो वे थकान दूर करने के लिए गीत गाती हैं। इसप्रकार प्राकृतिक वर्णन में उपन्यासकार बडा सफल हुआ हैं।

उपन्यास में प्राकृतिक परिवेश के साथ-साथ सामाजिक परिवेश का भी अच्छा वर्णन देखने को मिलता है। इस प्रकार के उपन्यासों में सामाजिक जीवन के चित्रण में अंचल के संस्कारों, परंपराओं, मान्यताओं, अंध:विश्वासों, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा एवं जीवन मूल्यों, वहाँ की सभ्यता और संस्कृति का वर्णन आता है।

<u>सामाजिक परिवेश - अंध:विश्वास एवं धार्मिक जीवन -</u>

रामदरश मिश्रजी के 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में ग्रामीण जन-जीवन की लोक मान्यताओं, अंधविश्वासों, परंपराओं का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली हैं।

इस उपन्यास में प्रारंभ में ही होली का चित्र प्रस्तुत किया है। उसमें रामदीन के माध्यम से वहाँ के लोगों में किसप्रकार अंधविश्वास होता है यह दिखाया है। उसमें सत्तर साल के बूढे रामदीन को होली के बीच में बिठा दिया है और सब लोग उसके सामने हो-हो करके तालियाँ पीट रहे हैं। जब गाँव का मुखिया रामदीन को वहाँ से निकल जाने को कहता है तो रामदीन कहता है -

'' होली में जो चीज पड जाती है उसे वापस नहीं लिया जाता। इससे गाँव का भला नहीं होता। मेरे बाहर निकल आने से न मेरा भला होगा न गाँव का।'' **14**

कछार अंचल में बसे ये लोग देवी-देवताओं, जादू-टोना, भूत-प्रेत, पूजा-पाठ, जंतर-मंतर

आदि पर अंध विश्वास रखते हैं। यहाँ गेंदा के माध्यम से चुडैल का प्रभाव किस प्रकार होता है इसका वर्णन किया है। अधिक उम्र तक विवाह न होने के कारण यहाँ की लडकियाँ मनोवैज्ञानिक बिमारियों से ग्रस्त हैं। वे पूजा-पाठ में विश्वास रखती हैं। गेंदा के माध्यम से चुडैल का अच्छा उदाहरण देखने को मिलता हैं। गेंदा सुबह-सुबह वासुदेव और शंकर जी की पूजा करती है। पुण्य पर्वो पर आसपास के तीर्थ-स्थानों और देव-मंदिरों की यात्रा कर आती है। इसी विधवा गेंदा पर चुडैल प्रभाव डालती है। मिश्रजी ने उपन्यास में लिखा है -

'' हाँ, गेंदा को चुडैल अब भी पकडती है, इतनी पूजा करने के बाद भी देवी-देवता उसके सहाय्यक नहीं होते। चुडैल ने उसे पकडा सो पकड ही रखा। सोखा ओझा के शब्दों में कभी बँसवारी की चुडैल होती है, कभी पोखरी की, कभी बडकी बारी की, यह चुडैल घंटों बेचारी के मुँह से झाग उगलवाती है, बेहोश रखती है। सोखा -ओझा इसे बहुत धमकाते हैं किंतु वह जाती नहीं। जब से वह पूजा-पाठ कर उदास रहने लगी है तबसे यह दौरा और बढ गया हैं।'' **15**

इन अंचलवासियों के मन में देवी-देवताओं के प्रति अटूट विश्वास दिखाई देता है। अनपढ, अज्ञानी लोग इसमें अधिक मात्रा में रहते हैं। गोरखपुर अंचल के पांडेपुरवा गाँव में दक्खिन में एक बडा सा ताल हैं, जहाँ काली माई का मंदिर है। चैत की नवरात्रि की आखिरी रात को वहाँ एक विराट मेला लगता है, जिसमें '' पास-पडोस के जर-जवार के अनेक गांवों से लोग देवी के दर्शन के लिए तथा अपना टोना-टटका भूत-प्रेत उतरवाने आतें हैं। रामधन तेली काली माई का सच्चा भक्त है इसी कारण डेवढी पर नगाडा बजने लगते ही सोखा साहब (रामधन तेली) के सामने भूत- प्रेत खुद बडबडाने लगते थे।''

इसके साथ ही इसी मंदिर में बीस-बाईस औरतें नाचने लगती हैं। सिर पर का कपडा खिसक जाता है, भूत-से बाल बिखरे हुए हैं, चोली के बटन भी खुल गये हैं। साडी अस्त-व्यस्त हो जाती है और वहाँ के भक्त लोग प्रसाद लूटते हैं।

लोगों के मन में कितना अंध-विश्वास रहता है इसका अच्छा उदा. हमें यहाँ देखने को मिलता हैं। ये लोग समझते हैं कि स्त्री-पुरूषों के शरीर में देवता का संचार रहता है चैत में नवरात्रि की आखिरी रात सुमेश पांडे भी सोखा थे इनके शरीर में देवता आते हैं लोगों का विश्वास यह था कि, वे बरम बाबा के सच्चे सेवक हैं, उनका हाथ बडा यशी है, जिसे उन्होंने छू दिया, वही अच्छा हो गया।

उपन्यास के ग्रामांचलवासी विधवा का मुँह देखना अशुभ मानते हैं। जब कोई विधवा रास्तें में मिल जाती है तब लोग वापस लौट आते हैं और वह औरत चली जाने के बाद वहाँ से जाते हैं इसी कारण गेंदा जैसी विधवाओं को जीना मुश्किल हो जाता है।

इसप्रकार इस उपन्यास में ग्रामांचल के लोगों में देवी-देवताओं के प्रति, भूत-प्रेत, शुभ-अशुभ के बारें में किस प्रकार अंध:विश्वास रहता है इसके अच्छे उदाहरण हमें स्थान-स्थान पर देखने को मिलते हैं। इसमें उपन्यासकार बडा ही सफल हुआ है।

नारी-शिक्षा नारी जगत के मानसिक विकास का आवश्यक अंग है। विभिन्न उपन्यासों में नारी शिक्षा के प्रति जागरूकता दर्शायी गयी हैं।'पानी के प्राचीर' में पांडेपुरवा गाँव में अनेकों नर-नारी हैं जिन्हें मिडिल तो क्या प्राइमरी की शिक्षा भी उपलब्ध नहीं है। गाँवों में नारी शिक्षा नहीं के बराबर है। समूचे गाँव में अकेली संध्या का गोरखपुर पढने जाना इसका प्रमाण है।

ग्रामांचल में नारी के प्रति अत्यंत धृणा भाव से देखा जाता है। इनमें रहनेवाले स्त्री-पुरूषों में सामाजिक न्याय के प्रति असमानता दिखाई देती है। नारी को वे अत्यंत हीन दृष्टि से देखतें हैं। नारी को समाज के विभिन्न रीति-रिवाजों का तथा अत्याचारों का सामना करना पडता हैं। बिंदिया, गाँव की एक खूबसूरत लडकी है वह जाति से चमारिन है, वह बैजू की रखैल है। बिंदिया को गाँव का हर एक आदमी अपने काम पर खींचने की कोशिश करता हैं।

नारी के वैवाहिक जीवन के बारें में तो अनेक गलत धारणाएँ होती हैं। नारी के विवाह के संबंध में तो दहेज अत्यंत पीडादायी होता है। दहेज के कारण अनेकों का विवाह अधिक उम्र के पुरूष से कर दिया जाता है, इसीकारण उसे उम्र भर इसका दुष्परिणाम भुगतना पडता हैं। 'गेंदा' इसका शिकार हुई है। दहेज देने के लिए बैजू के पास पैसे नहीं हैं इसी कारण वह अपनी बहन गेंदा की शादी एक बूढे के साथ कर देता है और उसका परिणाम यह होता है कि '' एक ही महीने के बाद गेंदा के विधवा होने का समाचार मिल जाता है।'' गेंदा के विधवा होकर अपने जन्मस्थान वापस आने के उपरांत वह स्वयं किस स्थिति में पहुँचती है, गेंदा के मुँह से ही सुनिए -

'' मैं राँड हूँ, लोग मेरा मुँह देखना पाप समझते हैं। शायद इसीलिए लोग कहीं जाते वक्त मुझसे बचने की कोशिश करते हैं और यदि संयोग से दिखाई पड गई तो लोग लौट जातें हैं। और तो और अपना ही

भाई (जिसे मै सहारा समझी थीं) मेरा मुँह नहीं देखना चाहता। एक चमाइन से भी मेरी हालत गयी गुजरी है।

दुनिया में सहारा कौन हो सकता है ? ससुराल में देवर है वह अपना है, मुझे चाहता है, प्यार करता है, किंतु वह भी मुँह देखे की बात। नहीं तो, अब तक मेरी खोज खबर लेने नहीं आया होता ! और देवरानी तो मेरी शक्ल भी नहीं देखना चाहती। और आखिर देवर है तो उसी का। सास भी मुझे डायन कहती है। कहती है कि मेरे विवाह के ही कारण उसका लडका मर गया। उँह, सास की कौन कहे वह तो किनारे का पेड है, अब गिरे, तब गिरे। तो मैं अभागिन हूँ, आदमी खाती हूँ और तो और मैं अपना मरद खा गयी। मेरा मुँह देखना भी पाप है। मैं राँड हूँ -------राँड हूँ --------राँड हूँ।'' **16**

और अब जैसे-जैसे गेंदा के जीवन के दिन कटते जाते हैं, गेंदा सूखती जाती है। गेंदा अभी तक तो जिव्हा से बोलती थी, पर अब वह सब सहन करते-करते सूखती जाती है। रामदरश मिश्र के शब्दों में --

'' उसकी देह का मांस सूख रहा है। नसें उभर आयी हैं, आँखें धँसी जा रही हैं। आँखों के नीचे काली-काली परतें बिछ गयी हैं। यह बैजू उस चमाइन के चक्कर में पडकर बहन को भर पेट खाने को नहीं देता, इसीलिए सूख रही है। मगर विधवाओं के लिए सूख कर काँटा हो जाना ही ठीक है। उसकी चटक-मटक, सजावट और उसका मोटा होना कुलच्छन है। पति नहीं है तो विधवा जीकर ही क्या करेगी ? उसे मर ही जाना चाहिए घुट-घुट कर। पता नहीं जिंदा रहने पर कब उसके पांव ऊँचे -नीचे पड जायें। गेंदा पति की याद में जल-जल कर सती हो रही है। वाह री गेंदा।'' **17**

इसी अंचल के पांडेपुरवा ग्राम के मुखिया अपने सुपुत्र महेश के विवाह में दहेज प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं, क्योंकि, दहेज से आर्थिक लाभ होता है सो तो गौण बात है, प्रमुख बात है प्रतिष्ठा। मेरे बेटे को इतना दहेज गाँव भर में सबसे अधिक मिला, यह अहंकार स्वाभाविक है।

भारतीय ग्रामीण पारिवारिक व्यवस्था के लगभग सभी वर्गों में पत्नी की पारिवारिक स्थिति पति से सदैव निम्न समझी जाती है और उसे सदैव अपनी आकांक्षाओं ,आशाओं एवं इच्छाओं को पति के समक्ष समर्पित कर चलना होता है। उत्तरप्रदेश के कछार अंचल के मुखिया के बेटे महेश की पत्नी अपने पति के दुर्व्यवहार के कारण घुल-घुल कर क्षीण हो जाती है। उसी प्रकार बनवारी भी अपने बडे भाई धनपाल के सिखाने एवं शिकायत करने से उसके सम्मान की रक्षा के लिए अपनी पत्नी की पिटाई करता है।

नारी की सामाजिक स्थिति के बारें में डॉ. विमल शंकर नागरजी लिखते हैं -

'' हिंदी के आँचलिक उपन्यासकारों ने भारतीय ग्रामीण समाज की जाति एवं पारिवारिक व्यवस्था की माँति उसकी नारी की परंपरागत एवं परिवर्तित स्थिति को भी अपने साहित्य में वाणी प्रदान की है।'' 18

उत्तर प्रदेश के कछार अंचल में भी नारी की गतिविधियों पर कडे नियंत्रण पाये जाते हैं। ग्रामीण जनता नगरों में नारी की स्वतंत्रता को देखकर उसे अधर्म का विस्तार समझती है।

जाति व्यवस्था भारतीय ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ है। हिंदी के सभी आँचलिक उपन्यासों में जाति व्यवस्था के समसामयिक स्वरूप का किसी न किसी रूप में चित्रण मिलता है। ग्रामीण अंचलों में अपनी ही जाति की लडकी से विवाह किया जाता है।

नीरू के विवाह के संबंध में संध्या अपनी चाची से कहती है -

'' हाँ चाची, आजकल के पढे-लिखे लोग दूसरी जाति में विवाह करते हैं, तुम्हें ताज्जुब क्यों होता हैं ? जाति-पाँति तो झूठे बंधन हैं।'' **19**

उत्तर में चाची जातिव्यवस्था के पक्ष में कहती है -

'' आजकल जो न हो जाय बिटिया। मगर नहीं, नीरू ऐसा नहीं करेगा। जाति-पाँति सनातनी चीज है। वह किसी के तोडने से टूटेगी भला ?'' **20**

उत्तर में नीरू भी कहता है, ''नहीं माँ, मैं तो अपनी ही जाति की लडकी ले आऊँगा। वह लडकी अच्छी लडकी है माँ। वह छः में पढती है, सुशील और सुंदर लडकी है माँ।'' **21**

इसप्रकार जाति-व्यवस्था के दर्शन हमें यहाँ देखने को मिलते हैं। जाति व्यवस्था के बंधनों को उतार फेंकनें की सामर्थ्य इन अचलवासियों में नहीं हैं।

<u>आर्थिक जीवन -</u>

ग्रामीण अंचल आर्थिक रूप से सबसे अधिक पिछडा व साधनहीन माना जाता है। ग्रामांचल शोषक वर्ग के अभिशाप से ग्रस्त है। उच्च वर्ग स्वयं सामने न आकर अप्रत्यक्ष रूप से अपने सहाय्यकों को शोषण करने के लिए विवश करते हैं। और उन्हीं के कारण कृषकों की स्थिति दयनीय होती है। शोषण मजदूरों व किसानों की आर्थिक स्थिति को शोचनीय बनाता है। कृषक वर्ग के शोषण के विरूध्द आवाज उठाते हैं। गरीबी के खिलाफ लडते हैं किंतु इसका कोई परिणाम नहीं होता बल्कि और शोषण बढता ही जाता है।

राम्दरश मिश्रजी ने अपने उपन्यासों में उच्च वर्ग के लोगों के अत्याचारों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। उन्होंनें 'पानी के प्राचीर 'में पांडेपुरवा नामक गांव में होनेवाले आर्थिक शोषण का वर्णन किया है। इसमें शोषण के कारण वहाँ के किसान वर्ग की आर्थिक स्थिति कितनी दयनीय होती है इसका अत्यंत यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। उपन्यास में गाँव की आर्थिक विषमता का बडा ही यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। आर्थिक विषमता ने गाँव के लोगों का जीवन भीतर तक कलूषित और विषाक्त बना दिया है। उनमें से अधिकांश प्रेम, करूणा संवेदनशीलता की वृत्तियाँ लुप्त हो गयी हैं। पांडेपुरवा ग्राम किसप्रकार अभावग्रस्त है इसका यथार्थ चित्र नीरू के इस कथन से हमें देखने को मिलता है।

''यहाँ न सडकें हैं, न शिक्षा संस्थाएँ हैं, न सुविधापूर्ण डाकखाने हैं, न सुरक्षा के लिए पुलिस चौकियाँ हैं, न चिकित्सालय है। न खेतो के सुधार और विकास के लिए कोई सरकारी व्यवस्था है। यहाँ है असूझ गरीबी, व्यापक अशिक्षा अजगरों की तरह बल खाते दौडते ऊँचे-नीचे नाले, बिमारी,बेकारी, आपसी फूट और सदियों पुरानी जर्जर नैतिक मान्यताएँ।'' **22**

गाँव की दयनीयता और इसका पिछडापन द्रष्टय है-- एक ओर पानी के प्राचीर चारों ओर से अंचल को घेरे हुए हैं दूसरी ओर गाँव के विकास को इसने रोका है. अंदर ही अंदर गाँववासी एक पीडा,घुटन व अभावों का निरंतर अनुभव कर रहे हैं।'' गाँव के चारों ओर पानी की ये दीवारें जो आप देख रहे हैं उसे गुलामी ने और बलवान किया हैं। इन प्राचीरों ने हमें एक छोटे से दायरे में घेर रखा है। बाहर से न कोई रोशनी आ पाती है ,न कोई शक्ति। इन दीवारों ने हमें घेरकर दुनिया की सारी सुविधाओं से वंचित कर दिया है।'' **23**

कितना सम्यक् चित्र लेखक ने नीरू के उपर्युक्त शब्दों में खींचा हैं। पूरा चित्र पाठकों के सामने बरबस खडा हो जाता हैं।

पांडेपुरवा की गरीबी का हाल बहुत परेशान करता है -'' हाँ केसू, रो रहा हूँ, तुमने आँखों के आगे से परदा हटा दिया तो इस अंधकार में किसानों के अनेक तडपते चेहरे, आँसू से भीगी हुई शून्य आँखें, धूप में तपती हुई रक्त से चिपचिपी पीठें, क्षमायाचना करते हुए हाथ, खाली झोपडीयाँ, बिलखते हुए बच्चे, अहकती हुई नारियाँ नजर आ रही हैं। विश्वास मान केसू , अब तेरी पढाई के रूपयों में किसानों के रक्त की गंध नहीं आएगी।'' **24**

उपर्युक्त पंक्तियाँ प्रस्तुत अंचल का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती हैं।

इस अंचल के ग्रामीण जनता के भोजन की स्थिति से उनकी आर्थिक दशा का परिचय सहज मिल जाता है। रामदरश मिश्रजी के शब्दों में इस अंचल की ग्रामीण जनता की भोजन व्यवस्था इसप्रकार है -

''शाम को बथुए और सरसों का साग भर पेट खाकर सुमेश परिवार आग तप रहा था। केवल केशव के लिए थोडे कोंदो के चावल का इंतजाम हो गया था। टीसुन की माँ आयी। रिरिया कर बोली'दिदी' छोटे लडके बीसून का ज्वर आज कई दिनों पर उतरा है। उसके प्थ्य के लिए कुछ भी नहीं हैं। मैं तो कई दिनों से बिना खाये-पिये जी रहीं हूँ, बथुआ का सहारा हो गया है लेकिन लडके को तो कुछ देना ही होगा। गाँव भर घूम आयी, किसी के मुँह से 'हाँ' नहीं निकली और सबका तो यही हाल है दीदी।''

'' मेरा भी वही हाल समझो, टिसुन की माँ। गाँव भर में आग लगी है, सभी जल रहे हैं, कौन किसको बुझाये ?'' टीसुन की माँ की रही सही उम्मीद टूट कर बिखर गयी। उसका चेहरा लटक आया। बाद में कुछ रूक कर केशव की माँ ने कहा - अरे टीसुन से और मुखिया से तो खूब पटती है वहीं से कुछ क्यों नहीं माँग लेती। टीसुन की माँ को इसमें व्यंग्य की बू आयी। फिर भी निर्विकार भाव से बोली -'' दीदी वहाँ भी गयी थी, मगर कहने लगे कि अभी तो तुमने पिछला उधार ही नहीं चुकाया फिर कैसे लेने चली आयी ? शरम भी नहीं आती है तुम लोगों को ? सुम्मेसर बनिया के यहाँ अब किस बूते पर जाऊँ जब लोटा, थालीगगरा सब बिक गये हैं।'' **25**

इस अंचल के लोगों की ऐसी अवस्था का कारण बाढ भी है। गौरा और राप्ती नदियों की बाढ यहाँ की जनता के जीवन को जर्जर करती है।

रामदरश मिश्र ने अपने उपन्यासों में उच्च वर्ग के लोगों के अत्याचारों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। पांडेपुरवा नामक गाँव में होनेवाले आर्थिक शोषण का वर्णन किया हैं।'' **मुखिया का जोर जुल्म**

इतना है कि आए दिन किसी न किसी को अपने कुचक्र में फँसा कर वह अपना उल्लू सीधा करता है। गाँव का मुखिया ही जब दुष्टता करता हैं तब कैसे गाँव की उन्नती संभव हो सकती है।'' 26

'' साले चमार, सियार सभी चलें हैं सुराज लेने। नेता बनेंगें सभी लोग, सभी कुत्ते गंगा नहाएँगे तो पता नहीं पत्तल कौन चाटेगा --- आज शाम तक झोपडें नहीं, खाली किए तो झोपडों में आग लगवा दूँगा।'' **27**

डॉ. राजकुमारी सिंह कहती है, 'गाँव का मुखिया ऐसा दुष्ट व्यक्ति है जो स्वराज्य प्राप्ति से बढकर अपने खेतों की जुताई के प्रति सचेत है। तो गांव की उन्नति कैसे संभव है ?''

''हिंदी के आँचलिक उपन्यास साहित्य में ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के कर्णधार एवं उत्पादन के मूल स्त्रोत भूमी के स्वामी जमीदारों की आर्थिक स्थिति एवं ग्रामीण जनता के साथ उनके व्यवहार का चित्रण मिलता है।''28

'पानी के प्राचीर' में जमींदार गजेंद्रबाबू के सिनियर तहसीलदार मुंशी दुक्खीलाल ग्रामीण कृषकों से कर वसूल करने का कार्य करते हैं। हरिपुर की छावनी पर मुंशी दुक्खीलाल दो वर्ष का लगान प्राप्त करने के लिए अमानवीय व्यवहार करते हैं। रामदरश मिश्र के शब्दों में --

'' दरबार में बीसों किसान पकड कर लाये गये थे। सबके सब फटे हाल, नंगे बदन, धूल धुसरित सिरवाले, मुंशिजी सबको को मुर्गा बना कर पीट रहे थे। चिलचिलाती धूप चोट के ऊपर लेपन कर रही थी। मुंशीजी गरजते जा रहे थे। --'' मैं सबकी नस पहचानता हूँ। तुम सब साले चोर हो बिना मारे तो सुनते ही नहीं हो। लात के देवता हो बात से क्या मानोगे ? दो-दो साल का लगान बाकी है। सिपाहियों के जाने पर घर छोडकर भाग जाते हो।''

एक सिपाही गरजा - '' अरे मुंशीजी, इस हरदुवरा ने हमें पचास बार दौडाया है , डेहरी में से पकडकर लाया हूँ। मुंशीजी ने एक डंडा जमाया, सिपाही ने लाठी के हरे से ढकेल दिया। किसान मुर्गे की हालत में ही गिर पडा, उसका ललाट ठीकरे से लग कर फूट गया। मुंशीजी के हाथ दुख गये थे। उनके आदेश पर सिपाही किसानों की मरम्मत कर रहे थे।

किसान कसाई के हाथ में पडी गाय की तरह निरीह आँखों से दया की भिक्षा माँग रहे थे।'' **29**

यहाँ हमें किसप्रकार जमींदार गरीब जनता का शोषण करते हैं इसका सही सही चित्रण देखने को मिलता है। इससे उस ग्राम की आर्थिक स्थिति कैसी है इसके सहज ही दर्शन होते हैं। इसके बारें में डॉ.राजकुमारी सिंहजी कहती हैं -

'' आँचलिक उपन्यासों में गरीबी का चित्रण विशेष रूप से पाया गया है। आर्थिक कोण को उभारने वाला प्रमुख पहलू ग्राम जीवन की गरीबी है।'' 30

'पानी के प्राचीर' में उस गरीबी का यथार्थ और सही चित्रण हमें देखने को मिलता है -'' नीरू देखता है कि घर सूना था,घर क्या था जर्जर दीवारों से घिरा हुआ एक मकान था जिसके एक ओर की दीवारें आधी गिरी हुई थीं और तीन ओर की दीवारें गिरने का इंतजार कर रही थीं।'' **31**

इस प्रकार डॉ, रामदरश मिश्रजी ने 'पानी के प्राचीर' में सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है। वर्गगत संघर्ष, जातिभेद, अंधविश्वास परंपरागत कुप्रथाएँ, नारी का विविधांगी शोषण, रूढीगत मान्यताएँ सूदखोरी, पुलिसी हथकंडे आदि का सम्यक चित्रण किया है।

'' कथानक के माध्यम से लेखक ने अस्पृश्यता, विधवा विवाह, वर्गभावना महाजनों की सूदखोरी एवं शोषण, बाढ के विनाशकारी प्रभाव, अशिक्षा, अज्ञानता और निर्धनता से छटपटाते हुए लोगों की समस्याओं के व्यापक चित्र उपस्थित किये हैं।'' 32

<u>राजनैतिक परिवेश :</u>

कछार अंचल की ग्रामीण जनता के साथ सरकार के प्रत्येक विभाग में से पुलिस विभाग का सर्वाधिक समीप का संबंध आता है। आँचलिक उपन्यास साहित्य में पुलिस विभाग के कर्मचारियों का जनता के साथ व्यवहार सर्वाधिक चित्रित होता है। उ.प्र. के कछार अंचल पांडेपुरवा में पुलिस के दरोगा जी बैजनाथ द्वारा बिंदिया को रखैल रखने के अपराध में गिरफ्तार करने आते हैं और अपनी परंपरागत व्यावसायिक गालियों भरी शब्दावली में उसके साथ व्यवहार करते हैं। परंतु ग्राम के मुखिया द्वारा मध्यस्थता करने एवं थानेदार साहब की धूस की व्यवस्था करने पर वह उसे छोड कर चले जाते हैं।

इस उपन्यास में बैजनाथ को गिरफ्तार करने आये दारोगा बैजू की पीठपर लात जमाते हुए कहते हैं -''क्यों साला बैजुआ बम्मन होकर चमाइन रखता है। '' **33** तब गाँव के मुखिया मध्यस्थता करते हैं वे

बैजू से दरोगाजी को देने के लिए रिश्वत लेते हैं और ऊपर से मुखिया आधे पैसे अपनी जेब में रखते हैं और दरोगाजी को देते हैं। इसप्रकार मुखिया पैसे भी कमाते हैं और ऊपर से बैजू पर मेहेरबानी भी दिखाते हैं।

इसीप्रकार शामधर बैजू की लाठी के प्रहार द्वारा मर जाते हैं तब थानेदार ग्राम में आते हैं उनके आने से सारी जनता भयभीत हो जाती है। मुखिया द्वारा जब थानेदार को चार सौ रूपये मिल जाते हैं तब बिना किसी छान-बीन के थानेदार गाँव से वापस चले आते हैं।'

' पानी के प्राचीर' में जमींदारी उन्मूलन की आशा की जा रही है और पांडेपुर का हरिजन नेता अपनी जाति के लोगों से कहता है कि अब हम जमीदारों का रोष नहीं सहेंगें क्योंकि उसे आशा है कि अब गांधीजी हरिजनों के हाथों में हिंदुस्थान की बागडौर थमा देंगे। हरिजन नेता फेंकू चमरोटी में बडे शोर के साथ कह रहा है -'' अब क्या भाइयो, अब तो गांधीजी हरिजन भाइयों के हाथ में ही हिंदुस्थान की बागडोर थमा देंगे। अब लोग मजूरी नहीं करेंगे हम जमींदार का रोष नहीं सहेंगें हम लोगों को गांधीजी खेत देंगे।''

फेंकू को आशा है कि स्वतंत्रता मिलने पर निश्चय ही जमीदारों की जमींनें सरकार उनसे छीनकर गरीबों को देगी। परिणामत: खेतहीनों को खेत मिल जायेंगे और जमींदारी का उन्मूलन होगा। अब पांडेपूर के लोग जमींदारों का विरोध करने के लिए सजग हो रहे हैं। हरिजन नेता कहता है -'' अब सुराज मिलने ही वाला है। जाग जाओ आप लोग भी जमींदारों का जुलूम अब मत बरदास्त करो। गांधीजी कहते हैं कि सुराज मिलने पर हरिजनों का राज होगा, वे कहते हैं कि सब हरिजन मिलकर जमीदारों के जुलूम का मुकाबला करो।''

डॉ. रामदरश मिश्रजी ने अपने उपन्यास साहित्य में ग्राम पंचायत की वर्तमान अवधारणा और उससे उत्पन्न स्थितियों का बडे मनोयोग से अंकन किया है।

'पानी के प्राचीर' में पांडेपुर गाँव के नीरू और हरिजन नेता फेंकू दोनों भविष्य के प्रति आशा संजोये हैं। हरिजन नेता फेंकू को आशा है कि हमें 15 अगस्त 1947 को सुराज मिलेगा और हमारे गाँव में पंचायती राज आयेगा, जिसमें हमारे हरिजनों को भी उन उच्च वर्ग की जातियों के समान अधिकार मिलेंगे। हमें पंचायती राज के माध्यम से न्याय मिलेगा। हमारे बच्चे भी स्कूल जाएँगे। उनका भविष्य सुरक्षित होगा।

पांडेपुरवा गाँव की छोटी जातियों के लोग अब अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गये हैं। हरिजनों

को समझा रहें हैं-

''भाइयों तुम भी क्रांति करो। सुराज अब मिल ही जायेगा। तब फिर क्या पूछना तुम्हारे पास भी खेत होंगे, मकान होंगे, तुम्हारे भी लडके इसकूल में पढने जायेंगे। हाँ, गान्ही जी कहते हैं - सुराज मिलने पर कोई भूखा नंगा न रहेगा।'' **34** उत्तर प्रदेश के कछार अंचल पांडेपुरवा में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व अखिल भारतीय काँग्रेस दल के कार्यकर्ता गण आँग्ल प्रशासन से भारतमाता को स्वतंत्र कराने के लिए नारे लगाते हैं उस समय ग्रामीण समाज में काँग्रेस दल के नेता महात्मा गांधी के संबंध में अनेक प्रकार की कथाएँ प्रचलित थीं। काँग्रेस दल के जुलूस में गांधी एवं नेहरू की लोग जयजयकार करते हैं। सन बयालीस की क्रांति के हरिजन नेता हरिजनों की सभा आयोजित कर गांधी-जवाहर द्वारा निर्देशित मार्ग पर चलने के लिए प्रबोधते हैं। काँग्रेस दल के कार्य -कर्ताओं के नेतृत्व में कछार अंचल की ग्रामीण जनता स्टेशन को ध्वस्त कर देती है।

पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को भारत स्वतंत्र हुआ हिंदी के आँचलिक उपन्यास साहित्य में इस राष्ट्रीय पर्व पर आयोजित आयोजनों का व्यापक स्तर पर चित्रण मिलता हैं। 'पानी के प्राचीर' में इस अवसर पर मनाए गये सारे उल्लासों का विस्तृत वर्णन किया है। लेखक को वातावरण -आँचलिकता के वर्णन में पर्याप्त सफलता मिली है। भविष्य की आशाओं के प्रति भी संकेत है।

निष्कर्ष :-

आंचलिक उपन्यासों में देशकाल और वातावरण का तत्व एक प्रकार से प्राणतत्व का काम करता है। ऐसे उपन्यासों का प्रतिपाद्य एक अँचल विशेष का जीवन होता है। इसके सामाजिक जीवन के चित्र में भौगोलिक ,प्राकृतिक परिवेश अत्यंत महत्वपूर्ण होता है । भौगोलिक परिवेश अंचल को विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करता है। प्राकृतिक वातावरण, प्राकृतिक दृश्यों - प्रात:संध्या, रात्रि, विभिन्न ऋतुओं, खेतों - खलिहानों आदि से संबंधित होता है और सामाजिक परिवेश उस अँचल विशेष के लोगों के रहन-सहन की विशेषताओं, उनकी परंपरागत मान्यताओं, तीज-त्यौहारों, पर्व-उत्सवों, तथा सांस्कृतिक निरूपण से संबंधित होता है। साथ ही साथ लोगों के जीवन की विभिन्न गतिविधियों, उनकी समस्याओं तथा उनकी आशा-आकांक्षाओं से परिपूर्ण चित्रण उपस्थित करता है। डॉ. मख्खनलाल के शब्दों में - 'देशकाल के अंतर्गत समाज, राष्ट्र की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रीवाज आदि आते हैं। अँचल-विशेष एक सीमित क्षेत्र के कारण वहाँ से संबंधित ये क्षेत्र अधिक

गहरे होते हैं।

प्रस्तुत अध्याय में अँचल, आँचलिक और आँचलिकता आदि की व्याख्या की गयी है और उसके संबंध में विभिन्न विद्वानों के मतांतर प्रस्तुत किये गये हैं तथा उनके आधारपर आँचलिक उपन्यास की सामान्य विशेषताओं का निर्धारण करने का प्रयास किया गया है। इन विशेषताओं के आलोक में आँचलिक उपन्यास को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता हैं-आँचलिक उपन्यास में किसी विशिष्ट भू-भाग या अँचल या जाति-वर्ग को केंद्र में रखकर वहाँ के भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से स्पंदित उसकी समग्र, संश्लिष्ट जीवन पध्दति को स्थानीय रंगतवाली सामान्य भाषा के माध्यम से अत्यंत ही संवेदनशील एवं यथार्थ परक अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया जाता है।

डॉ.रामदरश मिश्रजी का 'पानी के प्राचीर 'एक आँचलिक उपन्यास हैं जिसमें गोरखपुर जिले की दो नदियों-राप्ती और गौरा से घिरे हुये एक पिछडे भू-भाग की कहानी प्रस्तुत की गयी हैं। यह विशाल भू-भाग युगों से अपनी सारी हरियाली राप्ती और गौरा तो नदियों की भूखी धाराओं को लुटाकर विवशता, अभाव और संघर्ष के रूपमें शेष रह गया हैं। इस भू-भाग का नाम हैं पांडेपुरवा। इस अंचल का बाहर की दुनिया के साथ कोई जीवंत और रचनात्मक संबंध नहीं रह गया है। बंधे हुए जल की भाँति गाँव का जीवन ठहर गया है।

प्रारंभ में उस अंचल-विशेष के प्राकृतिक परिवेश का चित्रण किया गया हैं। उपन्यास का प्रारंभ ही फाल्गुनी पौर्णिमा की चाँदनी रात के वातावरण से हुआ है। होली के पर्व पर सभी एक दूसरे पर रंग फेंकते हैं। नगाडे, ताल, मृदंग के साथ रंग खेलते हुए गीत गाये जाते हैं। होली के अतिरिक्त अन्य अनेक उत्सवों का भी आयोजन किया जाता हैं जैसे नागपंचमी, दशहरा आदि। ये त्यौहार सारे गाँव में जान डाल देते हैं। अंचलवासियों के लिए हर ऋतु एक नया जीवन, नया अनुभव लाती हैं। फागुन के आनंदमयी मस्त वातावरण का चित्र सांगोपांग खडा किया गया हैं। प्राकृतिक दृश्यों तथा लोगोंके मनोविनोद का सम्यक् चित्र उतारने वाले विभिन्न स्थल गिनाये गये हैं। उसके साथ-साथ चैत ऋतु के मादक सौंदर्य का भी वर्णन किया गया हैं। वर्षा ऋतु का भी यहाँ पर्याप्त वर्णन मिलता हैं। वर्षा ऋतु के माध्यम से प्रकृति के कोप का सुस्पष्ट चित्र खींचनेवाले विभिन्न स्थलों के उदाहरण भी प्रस्तुत किये गये हैं। प्राकृतिक परिवेश के मनोहारी वर्णन में लेखक को बडी सफलता मिली हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में सामाजिक परिवेश का भी अच्छा वर्णन देखने को मिलता हैं। सामाजिक

जीवन के चित्रण में वहाँ के संस्कारों, परंपरांओं, मान्यताओं, अंधविश्वासों, अंतर्गत संघर्षों आदि का प्रभावशाली चित्रण मिलता हैं। होली के अवसरपर रामदीन के माध्यम से वहाँ के लोगों के अंधविशवास को दर्शाया गया हैं। कछार अंचल में बसे लोगों में देवी-देवताओं, जादू-टोना, भूतप्रेत, पूजापाठ, जंतर-मंतर आदि पर विश्वास पाया जाता हैं। गेंदा के माध्यम से चुडैल का प्रभाव दिखाया गया हैं। विवाह में विलंब होने के कारण यहाँ की मनोवैज्ञानिक बिमारियों से ग्रस्त लडकियाँ पूजा-पाठ में विश्वास रखती हैं। अनपढ , अज्ञानी लोग सोखा-ओझा की चपेट में आते हैं। इन अंचलों में विधवा का मुंह देखना अशुभ माना जाता हैं। परिणामस्वरुप गेंदा जैसी विधवाओं को जीना मुश्किल हो जाता हैं। ग्रामांचल में नारी के प्रति अत्यंत दूषित भाव पाया जाता हैं। स्त्री-पुरुषों में सामाजिक न्याय के प्रति असमानता दिखायी देती हैं। नारी को समाज के विभिन्न रीति-रिवाजों तथा अत्याचारों का सामना करना पडता हैं। बिंदिया उसका उदाहरण हैं

नारी के विवाह के संबंध में भी अनेक समस्यांएँ होती हैं। उनमें से दहेज-प्रथा, सबसे प्रमुख हैं। परिणामस्वरुप अनमेल विवाह, असमय विधवा होना, विधवावस्था की अनेक यातनाओं को भुगतना आदि का सम्यक चित्रण यहाँ मिलता हैं। दहेजप्रथा में आर्थिक उपलब्धि की अपेक्षा प्रतिष्ठा का भाव प्रमुख रहता हैं।

यहाँ आर्थिक दुरवस्था का भी मार्मिक चित्रण किया गया हैं। जमींदार, मुखिया आदि के द्वारा किया जानेवाला निर्मम शोषण भी पर्याप्त मात्रा में चित्रित हैं। अंचलवासियों की दरिद्रावस्था, उनके चिथडे, उनके खंडहर जैसे घर, उनके भोजन की अव्यवस्था उनके टूटते हुए स्वप्न आदि का बडा ही हृदयस्पर्शी चित्रण उपन्यास में सर्वत्र मिलता है। पुलिस दरोगा और सरकारी कर्मचारियों द्वारा की गई धाँधलियाँ रिश्वतखोरी आदि का भी विस्तृत वर्णन मिलता हैं। परंतु ग्रामों में नवजागरण की लहर दौडने लगी है। नगरों में जाकर पढे लिखे कुछ युवक स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागी होकर ग्रामों में जागरण पैदा कर रहे हैं। हरिजनों में भी काफी जागरण पैदा हुआ है। जमींदारी उन्मूलन की आशा निर्माण हो रही हैं। गांधी नेहरु जी के द्वारा इनके स्वप्नों की पूर्ति होने के आसार दिखाई देने लगे हैं। नीरू,गनपति, हरिजन नेता फेंकू आदि के माध्यम से लेखक ने इस पुनर्निर्माण के प्रति संकेत किया हैं। 15अगस्त,1947 को सुराज की प्राप्ति होती है। और अंचलवासियों में यह भावना जाग उठती कि ये दीवारें टूटेंगी, नये सपने खिलेंगे। आँचलिक उपन्यासों में परंपरागत दुर्गतियों और उनसे पुननिर्माण के प्रयासोंके चित्र खींचे गये हैं। इससे स्पष्ट होता है कि देश काल वातावरण के चित्रण में लेखक पूर्ण सफल हो गए हैं।

1. डॉ.आदर्श सक्सेना : हिंदी के आँचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि से उधृत पृ. - 203।
2. डॉ.राजकुमारी सिंह: हिंदी तथा अंग्रेजी के आँचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन पृ.22।
3. राधेशाम शर्मा 'कौशिक' : 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास का शिल्प विकास' पृ.54 ।
4. डॉ.शशिभुवन सिंहल :'हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ' पृ. 8 ।
5. डॉ.गोविंद त्रिगुणायत : शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत पृ. 432 ।
6. श्री.प्रकाश वाजपेयी : 'हिंदी के आँचलिक उपन्यास' पृ.-6 ।
7. सुभाषिनी शर्मा : 'स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास' से उधृत -पृ.-131 ।
8. डॉ. सुषमा धवन : हिंदी उपन्यास' पृ. 40 ।
9. डॉ. रामदरश मिश्र : 'हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा'पृ. 187-188 ।
10. डॉ. रामदरश मिश्र : 'पानी के प्राचीर' पृ.-18 ।
11. वही पृ. 28 ।
12. वही पृ. 102 ।
13. वही पृ. 104 ।
14. वही पृ. 14 ।
15. वही पृ. 156 ।
16. वही पृ. 127 ।
17. वही पृ. 157 ।
18. डॉ. विमल शंकर नागर : हिंदी के आँचलिक उपन्यास सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ -पृ.-58 ।
19. डॉ. रामदरश मिश्र: 'पानी के प्राचीर' पृ. 57 ।
20. वही पृ. वही ।
21. वही पृ. वही ।
22. वही पूर्वाभास से ।
23. वही पृ. 233 ।
24. वही पृ. 216 ।
25. वही पृ. 117 ।
26. डॉ. राजकुमारी : हिंदी तथा अंग्रेजी के आँचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन - पृ.205।
27. डॉ. रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर - पृ. 229 ।
28. डॉ. विमल शंकर नागर : हिंदी के आँचलिक उपन्यास- सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ - पृ.104।

29 डॉ.रामदरश मिश्र : 'पानी के प्राचीर' - पृ.160-161 ।

30 डॉ.राजकुमारी सिंह : हिंदी तथा अंग्रेजी के आँचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन - पृ.208 ।

31 डॉ.रामदरश मिश्र : 'पानी के प्राचीर'पृ-58 ।

32 डॉ.प्रदीपकुमार शर्मा :हिंदी उपन्यासों का शिल्पविधान पृ-228 ।

33 डॉ.रामदरश मिश्र : 'पानी के प्राचीर'पृ.42 ।

34 वही---वही -----वही पृ. 188 ।